जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

सबसे पहले सम्पूर्ण शक्ति लगाकर सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान प्राप्त करना चाहिये, तदुपरान्त निर्मल और दृढ़ चारित्र धारण करना चाहिये।
ह्न बिखरे मोती, पृष्ठ : 198

वर्ष : 28, अंक : 4 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मई (द्वितीय)2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

उपकार दिवस हर्षोल्लासपूवक मनाया

दिल्ली : यहाँ आत्मसाधना केन्द्र में दिनांक 1 मई, 2005 को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की जन्मजयंती उपकार दिवस के रूप में मनाई गई। प्रात: जिनेन्द्र अभिषेक पूजन के पश्चात् श्री सम्मेदशिखर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर ने अपने व्याख्यान में कहा कि श्री कानजीस्वामी ने अध्यात्मयुग का सूत्रपात किया, उन्होंने हमें स्वाध्याय करने की रुचि जगाकर उसकी सम्यक् विधि बताई। स्वाध्याय सम्यग्दर्शन में निमित्त होता है तथा सम्यग्दर्शन मोक्ष का कारण है; इसप्रकार गुरुदेवश्री ने हमें मोक्षमार्ग बताकर हम पर महान उपकार किया है। गुरुदेवश्री ने जो तत्त्वज्ञान हमें दिया है, उसको आत्मसात करके ही हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजली दे सकते हैं।

डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त डॉ. सुदीपजी जैन, डॉ. वीरसागरजी जैन, श्री विमलकुमारजी जैन एवं श्री अजीतप्रसादजी जैन ने अपने उद्गार व्यक्त किये। पण्डित राकेशजी शास्त्री नांगलोई एवं पण्डित संजीवजी उस्मानपुर ने मधुर काव्यपाठ किया तथा वीतराग-विज्ञान पाठशाला, शंकर नगर के बालकों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

ट्रस्ट के प्रबंधक पण्डित संदीपजी शास्त्री ने ट्रस्ट की गतिविधियों से अवगत कराया तथा श्री आदीशजी जैन ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती ममता जैन ने किया।

सभा के पूर्व श्री दिनेश जैन समता टाइम्स एवं श्री रूपेश जैन राजेन्द्र नगर के करकमलों से झण्डारोहण किया गया। गुरुदेवश्री की 116वीं जन्मजयंती के प्रसंग पर 116 माता-बहिनों द्वारा जिनवाणी लेकर विशाल शोभायात्रा निकाली गई।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुनील धवल भोपाल एवं पण्डित अमित शास्त्री फुटेरा ने सम्पन्न कराये।

धर्मप्रभावना

ब्र. यशपालजी जैन द्वारा दिनांक 23 से 27 अप्रैल तक डोंबिवली (पूर्व) में तीनों समय जिनधर्मप्रवेशिका पर प्रौढकक्षा ली गई। इसके अतिरिक्त पण्डित प्रसन्न शेटे जयपुर एवं पण्डित उमेश घोसरवाडे जयपुर द्वारा छहढाला एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर कक्षा तथा प्रवचन का लाभ मिला।

दिनांक 30 अप्रैल से 7 मई, 2005 तक **कुर्डुवाडी (सोलापुर-महा.)** में आपके द्वारा दोनों समय जिनधर्म प्रवेशिका एवं दोपहर में छहढाला ग्रन्थ पर सुश्राव्य प्रवचन हुये। साथ ही पण्डित अनिलकुमारजी बेलोकर, सुलतानपुर द्वारा रत्नकरण्डश्रावकाचार एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ पर प्रवचन हुये तथा पण्डित उमेशजी द्वारा बालकक्षा ली गई। रात्रि में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व अप्रैल माह में वाशिम, शिरपुर, मालेगाँव एवं इण्डी (कर्ना.) में भी आपके द्वारा अपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के आध्यात्मिक प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 6.35 बजे अवश्य सुनें।
साधना चैनल आपके यहाँ न आता हो तो श्री पंकज जैन (साधना चैनल) से मोबाइल नम्बर 09312506419 पर सम्पर्क करें।

बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री दिग. जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट, साधनानगर में प्रतिवर्ष की भाँती इसवर्ष भी दिनांक 1 से 8 मई, 2005 तक चतुर्थ बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के छात्रविद्वान पं. अश्विन नानावटी नौगामा, पं. विक्रान्त पाटनी झालरापाटन, पं. जितेन्द्र चौगुले हेरले, पं. विमोश जैन खड़ैरी, पं. विकास जैन खनियांधाना, पं. अनुराग जैन फिरोजाबाद, पं. कमलेश जैन बण्डा, पं. आदित्य जैन खुरई, पं. स्वतंत्र जैन खरगापुर, पं. संभव जैन नैनधरा, पं. प्रशान्त उखलकर गोवर्धन, पं. अभय जैन खड़ैरी, पं. निपुण जैन टीकमगढ़, पं. राहुल जैन अलवर, पं. एलमचन्द जैन गढखेडा, पं. अर्पित जैन बड़ामलहरा एवं स्थानीय विद्वान पं. सौरवजी शास्त्री, पं. गौरवजी शास्त्री एवं पं. मनीषजी द्वारा प्रतिदिन तीनों समय जिनेन्द्र-पूजन, सामूहिक कक्षा, विभिन्न सैद्धांतिक कक्षा आदि के माध्यम से जिनवाणी की अजस्र धारा प्रवाहित कर बालकों में

(शेष पृष्ठ 4 पर ....)

सम्पादकीय –

नींव का पत्थर

3 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

धन्य है वह नारी .....

जब तक जीवराज नेत्र बंद करके समाधिस्थ होकर आत्मा-परमात्मा के स्वरूप का स्मरण करता रहा, वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त के सहारे राग-द्वेष से ऊपर उठने का उग्र पुरुषार्थ करता रहा, तबतक समतारानी उनके जीवन से निराश होकर आंसुओं को पीते हुए अपने धैर्य का परिचय देती रही। उसने अपने मुख मण्डल पर उदासी की एक रेखा भी नहीं आने दी।

यद्यपि वह जीवराज के चिरवियोग की कल्पना मात्र से अन्दर से पूरी तरह टूट चुकी थी; किन्तु वह जीवराज के जीवन को समाधि की साधना में सफल करना चाहती थी। अतः वह उस मरणासन्न विषम परिस्थिति में भी अपनी मनःस्थिति पर दृढ़ता से काबू किए रही और जोर-जोर से संसार-शरीर और भोगों से वैराग्योत्पादक तथा भेदज्ञान से आत्मानुभूति में निमित्तभूत निम्नांकित भावनायें स्वयं भाती रही और पतिदेव को सुनाती रही।

संयोग क्षणभंगुर सभी पर आत्माध्रुवधाम है।
पर्याय लयधर्मा, परन्तु द्रव्य शाश्वत धाम है।।
इस सत्य को पहचानना ही धर्म का आधार है।
ध्रुवधाम की आराधना आराधना का सार है।।..
निज आत्मा निश्चय शरण व्यवहार से परमात्मा।
जो खोजता पर की शरण वह आत्मा बहिरात्मा।।
ध्रुवधाम से जो विमुख वह पर्याय ही संसार है।
ध्रुवधाम की आराधना आराधना का सार है।।..
जिस देह में आतम रहे वह देह ही जब भिन्न है।
तब क्या करें उसकी कथा जो क्षेत्र से भी अन्य है।।
हैं भिन्न परिजन भिन्न पुरजन भिन्न ही ध्रुवधाम है।
हैं भिन्न भगनी भिन्न जननी भिन्न ही प्रियवाम है।।..
अनुज-अग्रज सुत-सुता प्रिय सुहृद जब सब भिन्न हैं।
ये शुभ-अशुभ संयोगजा चिद्वृत्तियाँ भी अन्य है।।
स्वोन्मुख चिद्वृत्तियाँ भी आत्मा से अन्य है।
चैतन्यमय ध्रुवआत्मा गुणभेद से भी अन्य है।।[१]

इन भावनाओं को शान्त चित्त से सुनते-सुनते जीवराज की मूर्च्छा टूट गई, नेत्र खोल कर उसने देखा समता गंभीर मुद्रा में उदास बैठी वैराग्य भावना पढ़ रही है, वह मुस्कुराया, उसे मुस्कराते देख समता का मुखकमल भी खिल गया।

''सभी संयोग क्षणभंगुर हैं, पर्यायें लयधर्मा हैं, परिजन-पुरजन, जननी-भगनी, सुत-सुता, ध्रुव-धाम और प्रियवाम ह्न सब भिन्न हैं, अशरण हैं; एकमात्र शुद्धात्मा और परमात्मा ही शरणभूत हैं।'' ये सभी बातें जीवराज ने कान लगाकर सुनी थी, इससे उसका वैराग्य और अधिक दृढ़ हो गया और उसने शेष जीवन संयम और साधना के साथ जीने का संकल्प ले लिया। अब वह पूरी तरह स्वस्थ तो नहीं हो पाया, पर अपनी दिनचर्या किसी तरह समता के सहारे से कर लेता है और प्रवचनों के टेप, सी.डी. सुनकर अपना जीवन सार्थक कर रहा है।

समता को अत्यन्त उदास और दुःखी देखकर जीवराज को देखने आनेवालों में से एक ने कहा ह्न ''दूसरों को दुःखी न होने की सलाह देनीवाली समता स्वयं कैसी दुःखी हो रही है? क्या ये उपदेशमात्र दूसरों के लिए ही होते हैं ?''

दूसरे साथी ने समाधान किया ह्न ''अरे भाई ! बिना जाने-समझे और बिना सोचे-विचारे तुम्हें किसी की ऐसी आलोचना नहीं करना चाहिए। ज्ञानी की भूमिका क्या/कैसी होती है, इसका तो तुम्हें कुछ पता है नहीं और ऐसे अवसर पर भी जो मुँह में आया कह दिया। जो सुनेगा वह तुम्हें ही मूरख कहेगा। **किसी भी बात को कहने के पहले उसकी प्रतिक्रिया दूसरों पर क्या होगी, इस बात का विचार अवश्य करना चाहिए। खैर .....**''

सुनो ! कोई कितना भी ज्ञानी क्यों न हो, ऐसी जानलेवा बीमारी की प्रतिकूल परिस्थितियों में तो धैर्य का बाँध टूट ही जाता है। वह साधु-संन्यासिन तो है नहीं; ज्ञानी ही तो है। जीवनभर का रागात्मक संबंध भला पलभर में विराग में कैसे बदल जायेगा। अभी तुम ऐसा क्यों बोलते हो? धीरे-धीरे देखना होता है क्या?

दूसरों को समझाना, ढांढस बंधाना अलग बात है और स्वयं का ऐसी खतरनाक बीमारी की विषम परिस्थिति में सहज रह पाना बात ही कुछ और है। रोगी की वेदना की कल्पना से ही रोना आ जाता है।

समतारानी का रोना कोई अनहोनी बात नहीं है, उसकी भूमिका में वह बिल्कुल स्वाभाविक है। फिर भी उसकी हिम्मत की दाद तो देनी ही पड़ेगी।

धन्य है उस नारी को, जिसने जीवराज को प्रत्येक भली-बुरी परिस्थिति में फूलों जैसा सहेजा, संभाला और उसकी सेवा-सुश्रुषा से ही वह निराकुलता से आत्मा-परमात्मा की आराधना करते हुए अपने जीवन को सफल कर रही है।

जीवराज को बिस्तर पर पड़ा इस दुःखद अवस्था में ढांढ़स बंधाने आनेवालों में एक व्यक्ति ने दूसरे के कान में जो कमेन्ट्स किया, वह बात कानों-कान समतारानी तक पहुँच ही गई। इसलिए तो कहा है ह्न ''चतुर्कर्णे भिद्यतेवार्ता द्विकर्णे स्थिरी भवेत्'' अर्थात् कोई बात चार कानों में पहुँची नहीं कि पानी में तेल की तरह फैल जाती है। **अतः किसी से भी कहने के पहले बात को विवेक की तराजू पर अवश्य तौलना चाहिए।**

समता अत्यन्त सज्जन, सुशील और विवेकी तो है ही। उसने आगंतुक

१. बारह भावना की पंक्तियाँ - डॉ. भारिल्ल

द्वारा किए उस कमेन्ट्स को अन्यथा अर्थ में नहीं लिया। बल्कि उससे यह नया सबक सीखा कि ह्न ''**जो दूसरों से शिक्षारूप में कहा जाय, उस पर स्वयं भी अमल करना चाहिए। किसी को कहकर नहीं सिखाया जा सकता, करके ही सिखाया जा सकता है। अन्यथा कही गई बात अप्रभावी ही रहेगी।**'' यह सोचकर उसने तत्काल ही स्वयं को संभाला और सहज हो गई और शाम को प्रतिदिन एक-एक घंटे जीवराज के पलंग के पास बैठकर सामूहिक स्वाध्याय करने की व्यवस्था भी की, ताकि तत्वाभ्यास के वातावरण से उसका उपयोग बदला रहे और उसे रोगजनित पीड़ा का अनुभव कम से कम हो। उसकी योजना सफल हुई और दु:ख का वातावरण एकदम सहज हो गया।

ह्न ह्न ह्न

जीवराज के बीमार होने से समतारानी को दु:ख तो होता है, पर पुण्य-पाप के फल का विचार कर वह स्वयं शांत रहती है और जीवराज को सहनशील बनने में निमित्त बनती है। उसने अपने समता नाम को सार्थक करते हुए अन्य साधारण नारियों की तुलना में स्वयं को बहुत कुछ संभाल लिया। वह आर्तध्यान के दुष्परिणाम से तो सुपरिचित है ही, तत्वज्ञान के अभ्यास से उसकी परद्रव्य में इष्टानिष्ट की मिथ्याकल्पना भी क्षीण हो गई।

वह जानती है कि ''संयोग न सुखदायक है और न दु:खदायक है; और संयोगीभाव निश्चित ही दु:खदायक हैं। अत: जैसी/जो स्थिति है, उसी में सहज प्रयास रहना चाहिए। कामना तो यह है कि वे निरोग हो जाँय; परन्तु वह किसी के हाथ की बात नहीं है, अत: हमसे उनकी जितनी अनुकूलता रखी जा सके वैसा उपाय करके उनकी सेवा में सावधानी वर्तना है।''

यह सोचते-विचारते समतारानी का पति एवं पुत्र-पुत्री के प्रति होता हुआ राग वैराग्य में बदल गया। उसने साम्यभाव से जीवन जीने का निश्चय कर लिया। अब वह अपना सर्वाधिक समय भी जीवराज की सेवा-सुश्रुषा के सिवाय ध्यान और अध्ययन-चिन्तन मनन में ही बिताने लगी।

लकवा की बीमारी में व्यक्ति अधमरा-सा हो जाता है, हाथ-पैर काम नहीं करते, हिलना-डुलना भी मुश्किल होता है; बोलने में उच्चारण सही नहीं होता। लम्बे समय तक चलनेवाली बीमारी है। ऐसी हालत में अच्छों-अच्छों का धैर्य टूट जाता है, रोगी की उपेक्षा होने लगती है; पर समता उन नारियों में नहीं है, वह पति के लिए पूर्ण समर्पित है, उन्हें एक क्षण सूना नहीं छोड़ती, उसके इशारे पर दौड़-दौड़ कर काम करती है। धन्य है वह नारी जो दूसरों के दु:ख में इसतरह साथ दे रही है।

ह्न ह्न ह्न

जीवराज ने समतारानी से कहा कि ''समता ! यदि सम्यग्दर्शन मोक्ष महल की प्रथम सीढ़ी है तो मैं दावे से यह कह सकता हूँ कि ''**वस्तु स्वातंत्र्य का सिद्धान्त उस मोक्ष महल की नींव का मजबूत पत्थर है।** जिस तरह गहरी जड़ों के बिना वटवृक्ष सहस्त्रों वर्षों तक खड़ा नहीं रह सकता, गहरी नीव के पत्थरों के ठोस आधार बिना बहु-मंजिला महल खड़ा नहीं हो सकता; उसी प्रकार वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्त की ठोस नींव को समझे बिना मोक्ष महल खड़ा नहीं हो सकेगा। अतः इसका सर्वाधिक प्रचार-प्रसार एवं परिचय होना ही चाहिए।''

जीवराज ने इसे क्रियान्वय करने की योजना भी बनाई थी, परन्तु अनायास ही वे लकवा से पीड़ित हो जाने के कारण इस काम को नहीं कर सके। समता ने संकल्प किया कि पतिदेव की कामना को मैं पूरा करूँगी।''

समतारानी ने यदि ठान लिया तो वह करके ही दिखायेगी; क्योंकि आज तक उसने जो ठाना वह करके भी दिखा दिया। उसका कोई काम अधूरा नहीं रहा।

ह्न ह्न ह्न

नारियों के विषय में मेरी यह दृढ़ अवधारणा है कि यदि नारी कोई क्रान्तिकारी कदम उठाती है तो निःसंदेह उसमें पुरुषों की तुलना में कई गुनी अधिक क्षमता होती है। अन्यथा वह कोई क्रान्तिकारी कदम उठा ही नहीं सकती।

लेकिन नारियों के बारे में दिनकर कवि ने कहा है ह्न

''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।।''

उनकी शारीरिक और मानसिक रचना ही प्रकृतिप्रदत्त कुछ ऐसी है कि वे पुरुषों की तुलना में वस्तुतः अबला हैं। एक तो मातृत्व के कारण वे करुणा और प्रेम की मूर्ति हैं और भावुकता के कारण बात-बात में आँसू आ जाते हैं। अपनी शील सुरक्षा की चिंता भी उन्हें सदैव बनी ही रहती है। इन सब कारणों से संरक्षकों द्वारा ही बाल्यावस्था से ही उनकी कोमल कली को मरोड़ सा दिया जाता है।

गुप्तजी ने भी नारियों की दयनीय दशा को दर्शाते हुए कहा है ह्न

नरकृत शास्त्रों के सब बन्धन हैं नारी को ही लेकर।
अपने लिए सभी सुविधायें, पहले ही कर बैठे नर।।

तात्पर्य यह है कि साधारण नारी अपनी मान-मर्यादाओं में; सामाजिक रूढ़ियों और धार्मिक अंधविश्वासों में ऐसी जकड़ी, सिमटी रहती है कि वे सक्षम होकर भी अपनी क्षमता (योग्यता) को व्यक्त नहीं कर पातीं। उन्हें अपनी क्षमता व्यक्त करने के अवसर ही नहीं मिल पाते, इस कारण अधिकतर नारियों की क्षमता तो कुंठित ही हो जाती है।

विरली नारियाँ ही ऐसा साहस कर पाती हैं कि वे सामाजिक पुरातन पन्थी रूढ़ियों और धार्मिक अंध विश्वासों से ऊपर उठकर आगे आये।

समतारानी उन विरली साहसी नारियों में अग्रणी है, इसकारण उसने धार्मिक क्षेत्र में वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्त को जन-जन का विषय बनाने की बात ठान ली है।

हम कामना करते हैं कि वह अपने संकल्प में सफल हो। ●

(पृष्ठ 1 का शंष ...)

धर्म के प्रारंभिक संस्कारों का बीजारोपण किया गया।

बालकों के उत्साहवर्धन हेतु धार्मिक चित्रकला प्रतियोगिता, शास्त्रसज्जा प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

शिविर में लगभग 880 बालकों ने भाग लिया तथा अन्तिम दिन 790 परीक्षार्थियों ने लिखित एवं मौखिक परीक्षा दी। उत्तीर्ण सभी बालकों को अन्तिम दिन पुरस्कृत किया गया।

सम्पूर्ण शिविर का संचालन पण्डित अशोककुमारजी मांगुलकर राधौगढ़ एवं पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद ने किया।

दिनांक 8 मई को आ. सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की 116 वीं जन्मजयंती के शुभ अवसर पर श्री अशोकजी बड़जात्या द्वारा गुरुदेवश्री के सम्पूर्ण जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला गया। आभार प्रदर्शन श्री पदमजी पहाड़िया ने किया।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्री पूनमचन्दजी छाबड़ा एवं श्री मुकेशजी राजेशजी जैन देवलाली थे। **ह्न मनोहरलाल काला, विजय बड़जात्या**

कविता....

भगवान आत्मा ....

मुझे हर आत्मा में, भगवान आत्मा दिखता है।
शक्तिरूप में, बस ! व्यक्त होने भर की कमी है।
खान में जैसे मिलावट के रूप में पड़ा रहता है सोना
या पत्थर में जैसे मौजुद रहती है प्रतिमा,
ताव दे-देकर उसे शुद्ध करता है सुनार
या छैनी मार-मार कर उसमें मूर्ति उकेरता है शिल्पकार।
वैसा ही संसारावस्था में भी
कर्मों के संयोग में पड़ा हुआ है जीव
अपने को अशुद्ध अनुभव करते हुए
कभी रागरूप तो कभी द्वेषरूप
कभी क्रोधरूप तो कभी मानरूप
कभी मायारूप तो कभी लोभरूप
कभी अव्रती तो कभी असंयमीरूप
स्वयं परिणमित होता हुआ
भाव कर्मों के द्वारा नित नवीन द्रव्यकर्म बाँधता हुआ
द्रव्यकर्मों से फिर नोकर्म शरीरादि
इसप्रकार आस्रव-बंध का चक्र चलता है।
फिर संसरण होता है, जीव जन्मता-मरता है
नाना दु:ख भोगता है, हर अवस्था में
पर उसमें उपयोग जरूर रहता है
उसी उपयोग को आचार्य आत्मोन्मुख करने को कहते हैं।
व्रत-समिति-गुप्तियों का पालन कर
उपसर्ग परिषहों को जीतकर, ध्यान में तपकर
गुणस्थानों की सीढ़ियाँ चढ़कर
हर आत्मा संवर-निर्जरा द्वारा जैसा है वैसा रह जाता है,
इसी को कहते हैं ह्न **आत्मा परमात्मा बन जाता है।**
मेरे ख्याल में,
मोक्ष यही हो जाता है और आत्मा लोकाग्र में जा बसता है।

ह्न पण्डित बाहुबली भोसगे

पुस्तक समीक्षा ह्न

नाम : अन्तर्द्वन्द
लेखक : परमात्मप्रकाश भारिल्ल
पृष्ठ : 50
मूल्य : 6/- (छह रुपये मात्र)
प्रकाशक : डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट,
304, सनफ्लैश रिषी कॉम्प्लेक्स, होलीक्रॉस रोड,
आई.सी.कॉलोनी, बोरिवली (वेस्ट) मुम्बई-03
प्राप्ति स्थान : पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर

निर्द्वन्द करता है अन्तर्द्वन्द

परमात्मप्रकाश भारिल्ल की प्रथम कृति अन्तर्द्वन्द मन को झकझोरनेवाला आत्मकथानक है। कुल 50 पृष्ठों में होने से यह कोई बोझिल या नीरस दार्शनिक कृति महसूस नहीं होती है; इसलिये पाठक बिना किसी तनाव के इसको खोलता है। कृति का शीर्षक इतना सम्प्रेरक है कि हर पाठक को नाम से ही यह महसूस होता है कि इस कृति में जरूर कोई अपनी बात है और वह इसे पढ़ने को उत्सुक होता है। लेखक की '**अपनी बात**' पूरे कथानक की अपेक्षा कहीं अधिक प्रभावशाली है।

लेखक का मूल उद्देश्य जीवन में घटित होनेवाली विविध घटनाओं को अभिव्यक्ति देना है; जिनका दर्द हम बोलकर व्यक्त नहीं कर पाते हैं। हममें से अधिकांश 75 वर्ष के उस बुजुर्ग के मन में घटित होनेवाले दर्द से वाकिफ हैं। हममें से कई तो उस पीड़ा को सिर्फ डायरी में ही लिख पाते हैं और कई मन मसोसकर रह जाते हैं। पूरा कथानक एक 75 वर्षीय वृद्ध के मन को आधार बनाकर तैयार किया है। मुझे लगता है कि यह लेखक का ही अन्तर्द्वन्द है; जिसकी अवस्था मात्र 46 वर्ष है और निश्चितरूप से उसकी खुद की डायरी के कुछ अधूरे पृष्ठों का एक सुसज्जित गुलदस्ता है। पूरे कथानक में अभिव्यक्त होनेवाले संदेश ही मन को हिला देनेवाले हैं। पढ़कर लगता है कि यह अहसास हमारे भी तो हो सकते हैं।

आज के घनघोर प्रतियोगी युग में इसप्रकार का चिन्तन युग को एक दिशाबोध है। पूरी पुस्तक में इसीप्रकार के अनेक नये पहलू हैं, जो लगता है कि पहलीबार उभरकर आ रहे हैं। रचना की शैली बहुत अन्तरोन्मुखी किस्म की है, लगता है कि रचनाकार खुद से बातें कर रहा है। इस शैली का प्रभाव यह है कि पाठक अपने में खो जाता है और पढ़ते-पढ़ते वह कब खुद से बातें करने लगता है, उसे पता ही नहीं लगता।

लेखक के शब्दों, वाक्यों व सिद्धान्तों में जैनदर्शन का प्रभाव स्पष्ट है, लेकिन ये सिद्धान्त अध्यात्म की वह पूंजी है, जिनका सम्बन्ध हर एक व्यक्ति के जीवन से जुड़ा है। हम जैन हों या न हों पर आत्मा है; अत: आत्मा की व्याख्या खुद को आत्मा माननेवाले हर मनुष्य को रुचिकर लगेगी; क्योंकि यह उसकी खुद की व्याख्या है।

लेखक व्यावसायिक लेखक नहीं है और न ही उसने यह पुस्तक किसी आर्थिक लाभ अथवा सम्प्रदाय के प्रचार के लिये लिखी है; अत: यह पुस्तक हर वर्ग को पसन्द आयेगी। पुस्तक छपाई, कवर, कागज उत्कृष्ट व आकर्षक है। यह अच्छी शुरूआत होने के साथ ही अन्तर्द्वन्द पाठकों को निर्द्वन्दता का रास्ता बताती है। **- डॉ. अनेकान्त जैन,** अध्यक्ष जैनदर्शन विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री रा.संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

आवश्यकता

प्राथमिक/माध्यमिक एवं हाईस्कूल कक्षाओं में अध्यापन कार्य करने हेतु योग्य अनुभवी एवं संस्कारित शिक्षकों की आवश्यकता है तथा संस्कृत विषय के अध्यापन हेतु शास्त्री व बी.एड. अध्यापक की आवश्यकता है।

प्रवचन एवं प्रशासनिक अनुभवी अध्यापक के चयन को प्राथमिकता दी जायेगी। शीघ्र सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र ह्न अध्यक्ष, श्री नंदीश्वर दि. जैन विद्यापीठ
चेतनबाग, खनियाँधाना, जि. शिवपुरी (म.प्र.)
फोन : 07497-235474/235450

शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

सेलू (महा.) : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन नागपुर द्वारा संचालित महाराष्ट्र प्रान्त तत्त्व प्रचार-प्रसार योजना के अन्तर्गत दिनांक 17 से 21 अप्रैल, 2005 तक श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में बाल संस्कार शिविर एवं विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रात: एवं रात्रि में पण्डित अनंतकुमारजी विश्वंभर शिरपुर के मार्मिक प्रवचन हुये तथा पण्डित सुनीलजी बेलोकर सुल्तानपुर ने स्थानीय विद्वान अशोकजी वानरे के मार्गदर्शन में बाल एवं प्रौढ़कक्षा ली। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **ह्न विश्वलोचनकुमार जैनी**

वेदी शिलान्यास एवं शिविर सम्पन्न

बीना (सागर-म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में दिनांक 23 से 28 अप्रैल, 2005 तक क्रमबद्धपर्याय शिक्षण-शिविर पंचपरमेष्ठी विधान एवं वेदी शिलान्यास का आयोजन बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर स्थानीय एवं आगन्तुक साधर्मीजनों को पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं बा.ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के मार्मिक प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। **ह्न सत्येन्द्र जैन**

इन्जीनियरिंग में प्रवेश हेतु आवेदन

सायरबाई एज्यूकेशनल चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा सन् 2000 में संस्थापित आचार्य तुलसी के सम्मान में गणाधिपति तुलसी इन्जीनियरिंग कॉलेज चेन्नई शहर से 150 कि.मी. दूर वेल्लूर शहर में विगत 3 वर्षों से संचालित है।

यहाँ कम्प्यूटर साईंस, सूचना प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रीक-इलेक्ट्रोनिक इन्जीनियरिंग तथा इलेक्ट्रोनिक एवं कम्यूनिकेशन इंजिनियरिंग के पाठ्यक्रम उच्चस्तरीय मशीनों द्वारा आधुनिक प्रयोगशाला में पढ़ाये जाते हैं।

जैन विद्यार्थियों जिनके अभिभावकों की वार्षिक आय 1 लाख रुपये या इससे कम है, को 50 प्रतिशत तक छात्रवृत्ति देने का प्रावधान है। लड़के तथा लड़कियों के लिये न्यूनतम व्यय खर्च पर अलग-अलग आवासीय तथा शुद्ध भोजन व्यवस्था उपलब्ध है। इच्छुक छात्र आवेदन करें।

Add :- Ganadipathy Tulsi's Engineering College
Chittoor-Cuddalore Road, Kaniyambadi
(Post) VELLORE-632 102 (T.N.)
Ph. 0416-2230900/2222944, Fax-2230967
Website : www.gtecvellore.com

महावीर जयंती सानन्द सम्पन्न

1. मुम्बई (डोंबिवली) : इस अवसर पर स्थानीय श्री दिगम्बर जैन मंदिर में सप्त दिवसीय शिविर के अन्तर्गत दिनांक 22 अप्रैल को ब्र. यशपालजी जैन का प्रात: एवं रात्रि में महावीर जयन्ती पर विशेष प्रवचन हुआ। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

2. पुणे (महा.) : यहाँ श्री अरहंत दिगंबर जैन ट्रस्ट, चिंचवड द्वारा विविध कार्यक्रमों के अन्तर्गत सौ. अंजली शाह के प्रवचन और भक्ति-संगीत का कार्यक्रम आयोजित हुआ। साथ ही दिनांक 15 से 22 अप्रैल तक जैन महासंघ पिंपरी-चिंचवड द्वारा अहिंसा सप्ताह मनाया गया।

3. वाशिम (महा.) : यहाँ जवाहर कॉलोनी में महावीर जयन्ती के अवसर पर पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन हुआ तथा पण्डित सुनीलकुमारजी बेलोकर, सुलतानपुर के प्रवचन का लाभ मिला। सायंकाल बालकक्षा एवं जिनेन्द्रभक्ति के अतिरिक्त रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

4. भोपाल (म.प्र.) : नवनिर्मित श्री समवशरण मंदिर में महावीर जयन्ती के पूर्व दिनांक 16 एवं 17 अप्रैल को श्री महावीर पंचकल्याणक विधान एवं भूमिपूजन ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा के प्रवचनों का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि उपरोक्त मंदिर का निर्माण स्व. श्रीमती मुलियाबाई अजमेरा दि. जैन ट्रस्ट की भूमि पर श्रीमती शकुन्तला रतनलाल सौगाणी दि. जैन पारमार्थिक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में प्रारंभ हो रहा है।

वैराग्य समाचार

1. जयपुर निवासी श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. गुलाबचन्दजी जैन का 86 वर्ष की आयु में दिनांक 21 अप्रैल, 2005 को अत्यन्त शान्त परिणामों से देहावसान हो गया। आप जैनदर्शन एवं न्याय के अच्छे विद्वान थे।

2. मुम्बई निवासी श्री जयेन्द्रभाई दोशी के पिता श्री जयन्तीभाई दोशी का 79 वर्ष की आयु में दिनांक 1 मई, 2005 को देहावसान हो गया। गुरुदेवश्री के तत्त्वप्रचार-प्रसार की गतिविधियों में संलग्न सभी संस्थाओं को आपका सक्रिय सहयोग रहता था। ज्ञातव्य है कि टोडरमल स्मारक भवन स्थित त्रिमूर्ति जिनमंदिर के पंचकल्याणक में आपको बाल तीर्थंकर के माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

3. जयपुर निवासी श्री अरुणजी सोनी का दिनांक 2 मई, 2005 को देहावसान हो गया है। आप अच्छे समाजसेवी एवं पत्रकार थे तथा अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी थे। आपके स्वर्गवास से जयपुर जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

4. अहमदाबाद निवासी श्री बाबूलाल गोपालदास शाह का 85 वर्ष की आयु में दिनांक 19 अप्रैल, 2005 को शांतभावपूर्वक देहावसान हो गया है। आप गुरुदेवश्री द्वारा प्रचारित तत्त्व के प्रचार-प्रसार हेतु जीवनपर्यंत संलग्न रहे।

5. ग्वालियर निवासी श्री चम्पालालजी जैन का दिनांक 30 अप्रैल, 2005 को स्वर्गवास हो गया है। आप अच्छे स्वाध्यायी थे तथा जिनवाणी के अध्ययन-मनन में सदैव सक्रिय रहते थे।

उक्त सभी दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही चतुर्गति के दु:खों से मुक्त होकर निर्वाण की प्राप्ति करें ह्न यही मंगल भावना है। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

प्रवचनसार का सार 28

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

ग्यारहवाँ प्रवचन

आचार्य जयसेन प्रवचनसार परमागम के ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापनमहाधिकार को सम्यग्दर्शनाधिकार कहते हैं; क्योंकि वे ऐसा मानते हैं कि ज्ञेयतत्त्व को सही रूप में जाने बिना सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हो सकती।

इस ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापनमहाधिकार में सर्वप्रथम सामान्यज्ञेयतत्त्व-प्रज्ञापनाधिकार है। ज्ञान का ज्ञेय बननेवाले जगत के सभी पदार्थों का सामान्य स्वरूप अर्थात् सबमें पाया जानेवाला स्वरूप क्या है ? यह बताया जायेगा इस अधिकार में।

उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य से युक्त एवं गुण-पर्यायों से संयुक्त होना ही सभी ज्ञेयों का सामान्य स्वरूप है; जो सभी ज्ञेयों में समानरूप से विद्यमान है।

प्रत्येक द्रव्य का जो विशेष स्वरूप है, उसे विशेषज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापनाधिकार में लेंगे। तत्पश्चात् ज्ञेय व ज्ञान में विभाग का अधिकार लेंगे; जिसे आचार्यदेव ने ज्ञेय-ज्ञानविभागाधिकार नाम दिया है।

सामान्यज्ञेयप्रज्ञापनाधिकार में अभीतक महासत्ता और अवान्तरसत्ता की चर्चा हुई। अवान्तरसत्ता अर्थात् स्वरूपास्तित्व। प्रत्येक द्रव्य का अपने द्रव्य-गुण-पर्याय की सीमा में रहना ही स्वरूपास्तित्व है।

अपने ज्ञान और दर्शन गुण में परस्पर अतद्भाव है। एक द्रव्य के दो गुणों के मध्य अतद्भाव होता है; परन्तु दो द्रव्यों के मध्य अतद्भाव नहीं होता, अत्यंताभाव होता है। जिसमें द्रव्य-क्षेत्र-काल और भावरूप चतुष्टय भिन्न-भिन्न हों, उसे अत्यंताभाव कहते हैं।

पर्यायों के मध्य परस्पर अतद्भाव होता है। गुणों के मध्य परस्पर अतद्भाव होता है। द्रव्य और गुण के मध्य भी परस्पर अतद्भाव होता है, गुण और पर्याय के मध्य परस्पर अतद्भाव होता है। द्रव्य और पर्याय के मध्य भी अतद्भाव होता है; परंतु दो द्रव्यों के मध्य अत्यंताभाव होता है।

इसप्रकार यह सुनिश्चित हुआ कि एक द्रव्य के द्रव्य-गुण-पर्यायों के बीच परस्पर अतद्भाव और दो द्रव्यों के बीच अत्यन्ताभाव होता है।

इसके संदर्भ में गुरुदेवश्री का एक प्रभावी वाक्य है ह्न 'भावे भेद छे'। इसका अर्थ यह है कि द्रव्य-क्षेत्र एवं काल की अपेक्षा भेद नहीं है, मात्र भाव की अपेक्षा भेद है। ऐसे भेद को अतद्भाव कहते हैं और जहाँ द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव ह्न चारों की अपेक्षा भेद हो, वहाँ अत्यंताभाव होता है।

जिनवाणी में 'भाव' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में होता है।

द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव ह्न इन चारों को मिलाकर भी भाव शब्द का प्रयोग होता है और तीन को छोड़कर अकेले भाव के अर्थ में भी भाव शब्द का प्रयोग होता है।

अत: जहाँ 'भाव' शब्द का प्रयोग हो, वहाँ उसका अर्थ समझने/करने में विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त भाव शब्द का प्रयोग आत्मा में उत्पन्न होनेवाले राग-द्वेषादिक भावों के लिए भी किया जाता है। जब ऐसा कहा जाता है कि जिसके जैसे भाव होंगे, उसकी गति भी वैसी ही होगी; तब वहाँ प्रयुक्त भाव शब्द राग-द्वेष भाव के अर्थ में ही समझना चाहिए।

ऐसे ही परिणाम शब्द हैं, जिसके अनेक अर्थ होते हैं। परिणाम मात्र परिवर्तन को ही नहीं कहा जाता; अपितु द्रव्य और गुणों को भी परिणाम कहा जाता है।

विशेषत: प्रवचनसार के इस प्रकरण में आगे इसकी चर्चा है कि उत्पाद भी परिणाम है, व्यय भी परिणाम है और ध्रौव्य भी परिणाम है।

हमारी इन शब्दों के अर्थ में जो संकुचित दृष्टि हुई है, उसके कारण हम एक विशिष्ट अर्थ में ही इन शब्दों का अर्थ समझते हैं।

इसकारण भी वस्तुस्वरूप का मर्म हमारे ख्याल में नहीं आ पाता।

हम पर्याय शब्द का भी सीमित अर्थ ग्रहण करते हैं; जबकि पर्याय शब्द का अर्थ बहुत विस्तृत है।

पूर्व प्रकरण में पर्याय की चर्चा हो चुकी है। एक व्यंजनपर्याय है, जो दो द्रव्यों की मिली हुई पर्याय है। यहाँ पर्याय शब्द से 'मनुष्य पर्याय तिर्यंचपर्याय' यह अर्थ लिया जाता है और कहीं-कहीं गुण को भी पर्याय कहा जाता है। सहभावी पर्याय गुण ही तो है।

शास्त्र में इस बात की विस्तार से चर्चा है कि आत्मा क्रम और अक्रम से प्रवर्तमान पर्यायों का पिण्ड है। यहाँ अक्रम का अर्थ गुण है एवं क्रम का अर्थ पर्याय है। इसप्रकार शास्त्रों में गुण के अर्थ में पर्याय शब्द का प्रयोग हुआ है।

शास्त्रों में प्रदेशभेद और गुणभेद को भी पर्याय कहा है।

इसका कारण यह है कि जो-जो पर्यायार्थिकनय का विषय बनता है; उन सभी की जिनवाणी में पर्याय संज्ञा है। तथा जो-जो द्रव्यार्थिकनय का विषय बनता है; उन सभी की द्रव्य संज्ञा है। गुणभेद एवं प्रदेशभेद ह्न दोनों पर्यायार्थिकनय के विषय हैं; अत: उन्हें पर्याय कहा जाता है।

अब, प्रवचनसार की ९९वीं गाथा के भावार्थ पर विचार करते हैं।

भावार्थ इसप्रकार हैं ह्न ''प्रत्येक द्रव्य सदा स्वभाव में रहता है इसलिए 'सत्' है। वह स्वभाव उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यस्वरूप परिणाम है। जैसे द्रव्य के विस्तार का छोटे से छोटा अंश वह प्रदेश है; उसीप्रकार द्रव्य के प्रवाह का छोटे से छोटा अंश वह परिणाम है।

प्रत्येक परिणाम स्व-काल में अपने रूप से उत्पन्न होता है, पूर्वरूप से नष्ट होता है और सर्व परिणामों में एकप्रवाहपना होने से प्रत्येक परिणाम उत्पाद-विनाश से रहित एकरूप-ध्रुव रहता है और उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य में समयभेद नहीं है। तीनों ही एक ही समय में हैं। ऐसे उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यात्मक परिणामों की परम्परा में द्रव्य स्वभाव से ही सदा रहता है; इसलिए द्रव्य स्वयं भी, मोतियों के हार की भाँति, उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यात्मक है।''

यहाँ 'उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यात्मक परिणामों' ह्न ऐसा कहकर परिणाम का स्वरूप उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यात्मक है ह्न यह स्पष्ट किया है।

अभी ऐसे कई लोग हैं जो मात्र उत्पाद एवं व्यय को ही परिणाम मानते हैं तथा ध्रौव्य को उससे पृथक् करते हैं। वे कहते हैं कि ध्रौव्य तो द्रव्य है एवं उत्पाद-व्यय पर्याय हैं; इसलिए परिणाम हैं।

परन्तु यहाँ यह स्पष्ट लिखा है कि उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यात्मक परिणाम अर्थात् उत्पादात्मक परिणाम, व्ययात्मक परिणाम एवं ध्रौव्यात्मक परिणाम।

देखो, यहाँ उत्पाद और व्यय के साथ-साथ ध्रुवता को भी परिणाम कहा है।

यहाँ यह कहा जा रहा है कि उत्पाद, व्यय एवं ध्रौव्य यह द्रव्य का स्वभाव है; परंतु हम यह मानते हैं कि उत्पाद-व्यय पर्याय हैं एवं वे पर्याय के स्वभाव हैं, द्रव्य के स्वभाव नहीं हैं। कई लोग इसी की पुष्टि करते हुए कहते हैं कि पलटना तो पर्याय का काम है।

प्रवचनसार को समझने से पूर्व यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि पलटना न द्रव्य का कार्य है और न ही पर्याय का; प्रत्युत पलटना वस्तु का स्वभाव है, क्योंकि वस्तु स्वयं परिणमनशील है।

वस्तु का स्वभाव पलटकर भी नहीं पलटना है और नहीं पलटकर भी पलट जाना है।

यदि वस्तु पलटने रूप ही होती तो अनादि की होती ही नहीं; क्योंकि वह कभी की नष्ट हो गई होती, पलट गई होती; पर उसमें नित्यता भी है, जो अनादि से है। आचार्य कहते हैं कि नित्यत्व और अनादित्व इनका संयोग है। जो वस्तु अनादि होगी, वही नित्य होगी और जो नित्य होगी, वही अनादि होगी।

अब आचार्य कहते हैं कि यदि वस्तु अर्थात् आत्मा पलटती नहीं होती तो फिर निगोद में ही होती, आज मनुष्यगति में नहीं आ पाती।

अत: ये जो पलटनेवाला स्वभाव है, जिसे कुछ मुमुक्षु अपना स्वभाव ही मानने को तैयार नहीं हैं, जिसे वे हीन दृष्टि से देखते हैं; उन्हें यह समझना जरूरी है कि उस स्वभाव के कारण ही तुम निगोद से निकलकर यहाँ तक आए हो एवं उसी स्वभाव के कारण इस संसार से निकलकर मोक्ष में जाओगे। इसलिए मैंने लिखा है कि -

जब अनित्यता वस्तु धर्म तो क्योंकर दु:खकर हो सकती।
और जब स्वभाव ही दु:खमय हो सुखमयी कौनसी हो शक्ती।।

इस भगवान आत्मा में ४७ शक्तियों में से एक उत्पाद-व्यय-ध्रुवत्व नामक शक्ति भी है। वह शक्ति अनादि-अनंत है, वह शक्ति आत्मा का स्वभाव है।

जब उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यरूप होना आत्मा का स्वभाव है; तब पलटना आत्मा के लिए दु:खकर कैसे हो सकता है ?

तब वे कहते हैं कि गुरुदेवश्री ने कहा है कि यह आत्मा पर से भिन्न है, पर्याय से भिन्न है और अब आप कह रहे हो कि पर्याय अर्थात् पलटना वस्तु का स्वभाव है।

यह मतभेद नहीं, विवक्षा की भिन्नता है। परिवर्तनशील अंश पर दृष्टि केन्द्रित रहने से दृष्टि में अस्थिरता बनी रहती है। परिवर्तनशील अंश में अपनत्व स्थापित करने से सदा दु:ख के ही प्रसंग बनते हैं। यह परदेशी की प्रीति जैसा है; क्योंकि परदेशी चार दिन रहकर फिर जानेवाला है। उससे प्रेम करनेवाले तो दु:खी ही होनेवाले हैं; इसलिए उससे राग करने का, उसमें अपनत्व स्थापित करने का निषेध है।

इसीप्रकार यहाँ विवक्षा विशेष से पर्याय का निषेध किया गया है। निषेध तो एक विशिष्ट पर्याय का ही किया गया है, परिणमन का निषेध नहीं किया गया है, परिणमनस्वभाव का निषेध नहीं किया गया है।

परिणमन वस्तु का स्वभाव है। उत्पाद और व्यय स्वभाव हैं। जिसका उत्पाद हुआ है, वह नष्ट भी होगा। वस्तु में से उत्पाद-व्यय का नाश नहीं होता है। वस्तु में जो उत्पाद हुआ है, नाश उसका होता है। उत्पाद तो अगले समय में फिर होता है। इसे हम इस उदाहरण से समझ सकते हैं।

एक माता के पुत्र हुआ और वह उत्पन्न होते ही प्रसव के दौरान ही मर गया। उत्पन्न हुआ पुत्र मर गया है; परन्तु अभी उस माँ में पुत्र उत्पन्न करने की जो शक्ति है; वह तो नहीं मरी। अभी जब उसकी उत्पादन क्षमता नष्ट नहीं हुई तो उत्पाद कहाँ नष्ट हुआ ? उसमें जो राग उत्पन्न हुआ था, वह राग नष्ट हुआ है; उत्पाद तो अभी भी कायम है। अगले समय में वीतरागता का उत्पाद होता है। उत्पाद तो राग में भी है और वीतरागता में भी है। उत्पादकत्व और व्ययत्व का नाश नहीं हुआ; उत्पाद और व्यय तो प्रतिसमय होंगे।

पर्याय जो एकबार चली गई; अब वह उस पर्याय के रूप में पुन: कभी नहीं आएगी; किन्तु केवली के ज्ञान में तो वह खचित है, विद्यमान ही है। स्वकाल में वह पर्याय खचित है; परंतु अब न वह काल आएगा और न ही वह पर्याय।

सर्वज्ञ भगवान की वाणी से जो तत्त्व समझा जाता है, उसमें जो मर्म होता है, गहराई होती है, सत्यार्थता होती है; वह सत्यार्थता अपनी कल्पना से समझने में नहीं आ सकती।

पूज्य गुरुदेवश्री ने क्रमबद्धपर्याय को आगम के आधार से समझा और समझाया और अब यही सिद्धान्त वैज्ञानिकों की समझ में भी आ रहा है और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि भूत-वर्तमान-भविष्य निश्चित है; परन्तु इस निष्कर्ष में उन्हें सर्वज्ञ का सहारा नहीं था। उन्होंने अपनी हीबुद्धि से कल्पना के माध्यम से इस जगत को देखा; जिसमें एक बहुत बड़ी भूल हुई है।

जब मैं अमेरिका गया; तब लोगों ने मुझे एक अमेरिकन फिल्म का विशिष्ट भाग दिखाया। उस फिल्म की कथा यह थी कि एक व्यक्ति किसी कारणवश कालचक्र में उल्टा घूम जाता है। कालचक्र तो सीधा घूमता है; लेकिन वह उल्टा घूमने लगता है। वह व्यक्ति ६० वर्ष का था; परंतु कालचक्र के विपरीत परिणमन से वह व्यक्ति ३० वर्ष का हो जाता है। इस पूरी फिल्म में उस नायक के जीवन में ३० से ६० वर्ष तक घटित सभी घटनाओं का चित्रण किया गया है। बाद में इन्हीं घटनाओं को फिर से दोहराया गया है।

अब, वह नायक मानसिक रूप से तो ६० वर्ष का है; लेकिन शारीरिक रूप से ३० वर्ष का हो गया है तो उसे देखकर उसकी प्रेमिका उस पर मोहित हो जाती है। फिर ३० वर्ष पूर्व की घटनाओं को पुन: प्रस्तुत किया गया है; परंतु नायक उन घटनाओं में सहज नहीं रह पाता है।

इस उदाहरण के माध्यम से मैं यह कहना चाहता हूँ कि उन्होंने कालचक्र को परिणमनशील और सुनिश्चित तो बताया; परन्तु उसे दोहराया अर्थात् एक बार घटित कालचक्र उल्टा भी घूम सकता है ह्न ऐसा कहकर उन्हीं घटनाओं को पुन: प्रस्तुत किया। ●

हार्दिक शुभकामनायें

श्री संजयजी शास्त्री एवं श्रीमती प्रीति जैन बड़ामलहरा की प्रथम वैवाहिक वर्षगांठ दिनांक 11 मई के अवसर पर दिनेश जैन, देशना कम्प्यूटर्स, जयपुर हार्दिक शुभकामनायें व्यक्त करते हुये भावना भाते हैं कि आप दोनों अपने लौकिक जीवन के साथ-साथ लोकोत्तर जीवन को भी सफल करें।

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

सार समाचार

➠ द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी पर सोवियत संघ की विजय की 60 वीं वर्षगाँठ पर मास्को में आयोजित समारोह में अमेरिका के राष्ट्रपति बुश, चीनी राष्ट्रपति जिनताओ, रूसी राष्ट्रपति पुतीन व उनकी पत्नी लुडमिला, लक्जमबर्ग के प्रधानमंत्री जीन क्लॉड तथा भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहनसिंह आदि उपस्थित थे।

➠ विवाह पंजीकरण अनिवार्य करने के संबंध में सुप्रीमकोर्ट ने केन्द्रसरकार को निर्देश दिये।

➠ गोधरा ट्रेन हादसे के बाद चुनाव आयोग के मुद्देपर लालू यादव अकेले।

➠ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर छोटे दीवानजी, लालजी सांड का रास्ता, जयपुर में दिनांक 9 से 15 मई, 2005 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

➠ रणथंभौर अभयारण्य में घटते बाघों की संख्या को मद्देनजर रखते हुए देश में पहली बार टाईगर के डीएनए पर काम शुरू।

➠ भारत का रूस से सामरिक सहयोग बढ़ाने पर जोर।

➠ संसदभवन के बाहर दुर्घटनावश अपनी रायफल से गोली चल जाने से सीआरपीएफ का एक जवान मारा गया।

➠ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जीवन पर बनी फिल्म '**बोस द फारगॉटन हीरो**' का वर्ल्ड प्रीमियर शो जयपुर के राजमन्दिर सिनेमा हॉल में दिनांक 10 मई, 2005 को आयोजित हुआ।

➠ राजस्थान हाईकोर्ट ने प्रदेश के सभी शिक्षण संस्थाओं एवं विश्व-विद्यालयों के छात्रसंघ चुनावों पर रोक लगा दी। यह पाबंदी शिक्षक एवं कर्मचारी संघों के चुनावों पर भी लागू है।

➠ भारत ने अंतरिक्ष क्षेत्र में एक नया इतिहास रचते हुए दूरसंवेदी उपग्रह **कोर्टोसेट-1** को धुव्रीय उपग्रह प्रक्षेपण यान पीएसएलवीसी-6 की मदद से उसकी कक्षा में स्थापित कर दिया तथा इसके कुछ सेंकड बाद पीएसएलवी सी-6 ने दूसरे उपग्रह **हैमसैट** को भी उसकी कक्षा में स्थापित कर दिया। कोर्टोसेट दूरसंवेदी उपग्रह घर-घर और गाँव-गाँव की तस्वीर अपने कैमरे में लेने में सक्षम है तथा हैमसैट उपग्रह रेडियो सेवायें देनेवाला है।

आगामी कार्यक्रम ....

1. देवलाली (नासिक-महा.) : जैन भूगोल को समझने के लिये पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट द्वारा दिनांक 2 से 5 जून, 2005 तक 4 दिवसीय विशेष कक्षाओं का आयोजन देवलाली में किया जा रहा है।

यह शिविर करणानुयोग विशेषज्ञा डॉ. उज्ज्वलाबेन शाह, मुम्बई द्वारा संचालित किया जायेगा। जिज्ञासु भाई-बहिनों को ट्रस्ट की ओर से आवास एवं भोजनादि की नि:शुल्क व्यवस्था रहेगी। सभी साधर्मीजन सादर आमंत्रित है। **ह्न समस्त ट्रस्टी, पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट**

2. अहमदाबाद (गुज.) : अहमदाबाद-हिम्मतनगर हाईवे रोड पर चिलोडा के निकट नवनिर्मित **चैतन्यधाम** में नवीन तैयार हुए विद्वतवर्ग निवास, कार्यालय, अतिथि निवास, भोजनालय, औषधालय आदि का उद्घाटन विविध महानुभावों द्वारा दिनांक 3 से 6 जून, 2005 तक सम्पन्न होने जा रहा है।

इसी अवसर पर दिनांक 3 से 10 जून तक पंचपरमेष्ठी विधान एवं बाल शिक्षण शिविर का भी आयोजन किया जायेगा; जिसमें पण्डित मीठाभाई दोशी, पण्डित बाबूभाई मेहता, पण्डित शैलेशभाई शाह, पण्डित चन्दूभाई मेहता, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद आदि विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त होगा। सभी साधर्मीजन सादर आमंत्रित है। **ह्न मंत्री, चैतन्यधाम, नेशनल हाईवे नं.8, मु.पो. घणप, जिला-गांधीनगर (गुज.) फोन-079-23272222**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

02 जून से 28 जुलाई	**विदेश**	**धर्मप्रचारार्थ**
31 जुलाई से 09 अगस्त	**जयपुर**	**शिक्षण-शिविर**
01 से 07 सितम्बर	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**
08 से 18 सितम्बर	**अहमदाबाद**	**दिगम्बर पर्यूषण**

प्रवेश प्रारंभ

खनियाँधाना (म.प्र.) : बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री एवं बाल.ब्र. सुमतप्रकाशजी के सान्निध्य में श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान नंदीश्वर दि. जैन विद्यापीठ खनियाँधाना द्वारा संचालित कक्षा छठवीं से दसवीं तक के आवासीय विद्यालय में कक्षा 6 में प्रवेश इच्छुक छात्रों को योग्यता के आधार पर प्रवेश दिया जा रहा है।

आवेदन पत्र प्राप्त कर जमा कराने की अन्तिम तिथि दिनांक 5 जून, 2005 है। इच्छुक छात्र शीघ्र ही सम्पर्क करें। सम्पर्क सूत्र ह्न

अध्यक्ष, श्री नंदीश्वर दि. जैन विद्यापीठ चेतनबाग,
खनियाँधाना, जि. शिवपुरी (म.प्र.)
फोन : 07497 - 235474/235450

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) मई (द्वितीय) 2005
J. P. C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127